eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

दादाभाई नौरोजी के सिद्धांतः राजनीतिक विचारों के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन

[1]सुदेश कुमार

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, (माधव महाविद्यालय ग्वालियर) जिवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, म0प्र0

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

दादाभाई नौरोजी के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को उन प्रगतिशील विचारों के सिद्धांतों में उजागर किया गया है, जिन पर वह विश्वास करते थे। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के समान व्यवहार में विश्वास किया और हमेशा महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के महत्व को उठाया। दादाभाई नौरोजी समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों के कट्टर विश्वासी भी थे।

यह जाति आधारित भेदभाव के कई रूपों के खिलाफ उनकी नाराजगी में परिलक्षित होता है, जिसके खिलाफ उन्होंने बात की थी और नृवंशविज्ञान सोसाइटी ऑफ लंदन द्वारा वैधता प्राप्त अंग्रेजों के नस्लीय वर्चस्व के सिद्धांत के प्रचार का भी खंडन किया था। प्रस्तुत शोध पत्र में दादाभाई नौरोजी के सिद्धांतः राजनीतिक विचारों के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन कर नवीन तथ्यों को प्रस्तुत कतनें का प्रयास किया गया है।

संकेतशब्द– दादाभाई नौरोजी, सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, समानता, बंधुत्व एवं राजनीतिक विचार।

Introduction

सर्वत्र विदित है कि दादाभाई नौरोजी एक राजनीतिज्ञ थे जिनका भारत की स्वतंत्रा में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दादाभाई नौरोजी का जन्म 4 सितंबर, 1825 को बॉम्बे में एक पारसी परिवार में हुआ था। दादाभाई नौरोजी राजनीतिक और सामाजिक नेताओं के संस्थापक अग्रदूतों की मूल श्रेणी में आते हैं, जिन्होंने औपनिवेशिक प्रशासन की बुराइयों को पकड़ लिया। वह एक बुद्धिजीवी और शिक्षाविद, एक अर्थशास्त्री, एक कट्टर राष्ट्रवादी, एक समाज सुधारक और एक शिक्षक भी थे।

दादाभाई नौरोजी, दिनेश एडुल्जी वाचा और ए0 ओ0 ह्यूम जैसे अन्य नेताओं के साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन में शामिल थे। उन्होंने अन्य महत्वपूर्ण संगठनों जैसे रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बॉम्बे और लंदन में ईस्ट इंडियन एसोसिएशन जैसे कई अन्य संगठनो की स्थापना के लिए भी जिम्मेदार थे। उनकी योग्यता ने उन्हें ब्रिटिश के संसद सदस्य बनने वाले पहले भारतीय बनने के लिए प्रेरित किया, जहां उन्होंने यूनाइटेड किंगडम हाउस ऑफ कॉमन्स में लिबरल पार्टी के सदस्य के रूप में संसद सदस्य की जिम्मेदारी निभाई गयी।

दादाभाई नौरोजी नें अर्थशास्त्र के लिए अपनी अविश्वसनीय योग्यता के परिणामस्वरूप "पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया नामक एक सारगर्भित लेख लिखा, जहाँ इसके पन्नों में उनके प्रसिद्ध थ्योरी ऑफ "ड्रेन ऑफ वेल्थ' की बात की गई थी। इस सिद्धांत ने औपनिवेशिक अंग्रेजों द्वारा किए

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

गए शोषण के विभिन्न रूपों से विश्लेषण किया, जो कि भारत की अर्थव्यवस्था कमज़ोर करने का कारण थे।

समानता पर विश्वास रखने वाले और प्रगतिशील विचारों के धारक, दादाभाई नौरोजी पुरुषों और महिलाओं के समान व्यवहार में विश्वास करने वाले एक अग्रदूत थे, जिन्होंने महिलाओं के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने की वकालत की थी। नरमपंथियों के जमावड़े से संबंधित, उन्होंने जातिगत भेदभाव और उत्पीड़न के सभी रूपों के खिलाफ सख्ती से बात की और संवैधानिक प्रक्रियाओं के महत्व को बरकरार रखा।

नौरोजी वर्ष 1892 में हुए ब्रिटेन के आम चुनावों में 'लिबरल पार्टी' के टिकट पर 'फिन्सबरी सेंट्रल' से जीतकर भारतीय मूल के पहले 'ब्रितानी सांसद' बने थे। नौरोजी ने भारत में कांग्रेस की राजनीति का आधार तैयार किया था। उन्होंने कांग्रेस के पूर्ववर्ती संगठन 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' के गठन में मदद की थी। बाद में वर्ष 1886 में वह कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। उस वक्त उन्होंने कांग्रेस की दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाई।

नौरोजी गोपाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी के सलाहकार भी थे। उन्होंने वर्ष 1855 तक बम्बई में गणित और दर्शन के प्रोफेसर के रूप में काम किया। बाद में वह 'कामा एण्ड कम्पनी' में साझेदार बनने के लिये लंदन गए। वर्ष 1859 में उन्होंने 'नौरोजी एण्ड कम्पनी' के नाम से कपास का व्यापार शुरू किया। कांग्रेस के गठन से पहले वह सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी द्वारा स्थापित 'इंडियन नेशनल एसोसिएशन' के सदस्य भी रहे।

यह संगठन बाद में कांग्रेस में विलीन हो गया। उन्होंने 1906 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 'कलकत्ता अधिवेशन' की अध्यक्षता की। उनकी महान् कृति पॉवर्टी ऐंड अन–ब्रिटिश रूल इन इंडिया 'राष्ट्रीय आंदोलन की बाइबिल' कही जाती है। वे महात्मा गांधी के प्रेरणा स्त्रोत थे।

नौरोजी पहले भारतीय थे जिन्हें एलफिंस्टन कॉलेज में बतौर प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति मिली। बाद में यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन में उन्होंने प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाए दीं। उन्होंने शिक्षा के विकास, सामाजिक उत्थान और परोपकार के लिए बहुत–सी संस्थाओं को प्रोत्साहित करने में योगदान दिया, और वे प्रसिद्ध साप्ताहिक 'रास्ट गोफ्तर' के संपादक भी रहे। वे अन्य कई जर्नल से भी जुड़े रहे। वे सामाजिक कार्यों में भी रुचि लेते थे। उनका कहना था कि, 'हम समाज की सहायता से आगे बढ़ते हैं, इसीलिए हमें भी पूरे मन से समाज की सेवा करनी चाहिए।'

परिकल्पना

दादाभाई नौरोजी के सिद्धांतः– राजनीतिक विचारों के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रयास के अन्तर्गत कतिपय निम्नलिखित परिकल्पनायें रेखांकित की जा सकती हैं–

1– दादाभाई नौरोजी नें जीवन के प्रति दृष्टिकोण को प्रगतिशील विचारों के सिद्धांतों में उजागर किया गया है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

2– दादाभाई नौरोजी नें नरमपंथियों के जमावड़े से संबंधित, जातिगत भेदभाव और उत्पीड़न के सभी रूपों के खिलाफ सख्ती से बात की और संवैधानिक प्रक्रियाओं के महत्व को बरकरार रखा है।

3– दादाभाई नौरोजी समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों के कट्टर विश्वासी भी थे।

4– दादाभाई नौरोजी जाति आधारित भेदभाव के कई रूपों के खिलाफ उनकी नाराजगी में परिलक्षित होता है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में अनुसूची विधि और निरीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त अध्ययन संबंधी द्वितीय तथ्यों को विभिन्न शोध प्रबंधों, गजेटियर, शोध पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों से डेटा एकत्रित्र व प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है। यह शोध–पत्र पुस्कालय अध्ययन पद्धति पर आधारित है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

दादाभाई नौरोजी राजनीतिक विचारों से काफ़ी उदार थे। ब्रिटिश शासन को वे भारतीयों के लिए दैवीय वरदान मानते थे। 1906 ई. में उनकी अध्यक्षता में प्रथम बार कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में स्वराज्य की मांग की गयी।

दादाभाई ने कहा हम दया की भीख नहीं मांगते। हम केवल न्याय चाहते हैं। ब्रिटिश नागरिक के समान अधिकारों का ज़िक्र नहीं करते, हम स्वशासन चाहते है। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने भारतीय जनता के तीन मौलिक अधिकारों का वर्णन किया है। ये अधिकार थे–

1– लोक सेवाओं में भारतीय जनता की अधिक नियुक्ति।
2– विधानसभाओं में भारतीयों का अधिक प्रतिनिधित्व।
3– भारत एवं इंग्लैण्ड में उचित आर्थिक सबन्ध की स्थापना।

दादाभाई नौरोजी बंबई में एक पहचान क़ायम करने के बाद इंग्लैण्ड गए और वहाँ 'भारतीय अर्थशास्त्र और राजनीति' के पुनरुद्धार के लिए आवाज़ बुलंद की और हाउस ऑफ कॉमंस के लिए चुने गए।

दादाभाई नौरोजी ने ब्रिटिश उपनिवेश के प्रति बुद्धिजीवी वर्ग के सम्मोहन के बीच उसकी स्याह सचाई को सामने रखने के साथ ही कांग्रेस के लिये राजनीतिक ज़मीन भी तैयार की थी। उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेश के प्रति बुद्धिजीवी वर्ग के सम्मोहन को खत्म करने का प्रयास किया।

दादाभाई नौरोजी को भारतीय राजनीति का 'ग्रैंड ओल्डमैन' कहा जाता है। वे पहले भारतीय थे जिन्हें 'एलफिंस्टन कॉलेज' में बतौर प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति मिली। बाद में 'यूनिवर्सिटी कॉलेज', लंदन में उन्होंने प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाए दीं। उन्होंने शिक्षा के विकास, सामाजिक उत्थान और परोपकार के लिए बहुत–सी संस्थाओं को प्रोत्साहित करने में योगदान दिया, और वे प्रसिद्ध 'साप्ताहिक रास्ट गोफ्तर' के संपादक भी रहे। वे अन्य कई जर्नल से भी जुड़े रहे। बंबई में एक

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

पहचान क़ायम करने के बाद वे इंग्लैण्ड गए और व 'भारतीय अर्थशास्त्र और राजनीतिक पुनरुद्धार' के लिए आवाज़ बुलंद की और 'हाउस ऑफ कॉमंस' के लिए चुने गए।

सुरेंद्रनाथ बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, मदनमोहन मालवीय, गोपालकृष्ण गोखले, केटी तैलंग, फिरोजशाह मेहता आदि शांतिपूर्ण ढंग से मांगें मनवाने के लिए प्रयासरत थे। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाना इन सभी नेताओं का एकमात्र लक्ष्य था।

दादाभाई ने यह मांग उठाई कि इंग्लैंड की पार्लियामेंट में कम से कम एक भारतीय के लिए भी सीट सुनिश्चित होनी चाहिए। उनकी प्रखर प्रतिभा से प्रभावित और अकाट्य तर्को से पराजित होकर अंग्रेजों ने उनकी यह मांग मान ली। उन्हे ही इंग्लैंड की पार्लियामेंट में भारतीयों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया।

अंग्रेजों की पार्लियामेंट में खड़े होकर उनके विरोध में बोलना दादाभाई जैसे व्यक्ति के लिए ही संभव था। उन्होंने बड़ी सूझबूझ से अपने इस दायित्व का निर्वहन किया। देश की स्वतंत्रता के लिए दादाभाई नौरोजी के मार्गदर्शन और उनके सक्रिय योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

देश और समाज की सेवा के लिए समर्पित दादाभाई नौरोजी नरमपंथी नेताओं के तो आदर्श थे ही, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जैसे गरमपंथी नेता भी उन्हे प्रेरणास्त्रोत मानते थे। तिलक ने दादाभाई के साथ रहकर वकालत का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। वह अपने किसी कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहते थे। यदि इस लेख का परिणाम या निष्कर्ष केवल एक वाक्य में कहें तो दादाभाई नौरोजी राजनीतिक विचारों से काफ़ी उदार थे।

सन्दर्भ सूचीः–

1- "India Post Issued Stamp on Dadabhai Naoroji". Phila-Mirror. 29 December 2017. Retrieved 19 May 2018.
2- Dilip Hiro (2015). The Longest August: The Unflinching Rivalry Between India and Pakistan. Nation Books. p. 9. ISBN 9781568585031. Retrieved 9 December 2015.
3- Bharucha, Nilufer E. (2000). "Imagining the Parsi Diaspora: Narratives on the wings of fire". In Crane, Ralph J.; Mohanram, Radhika (eds.). Shifting Continents/Colliding Cultures: Diaspora Writing of the Indian Subcontinent. Amsterdam: Rodopi. p. 62. ISBN 978-9042012615. Retrieved 13 January 2015.
4- Mistry, Sanjay (2007) "Naorojiin, Dadabhai" in Dabydeen, David et al. eds. The Oxford Companion of Black British History. Oxford: Oxford University Press. pp. 336–337; ISBN 9780199238941
5- John R. Hinnells (28 April 2005). The Zoroastrian Diaspora: Religion and Migration. OUP Oxford. p. 388. ISBN 978-0-19-826759-1. Retrieved 19 May 2017.
6- Fourteenth Annual General Meeting of the British Indian Association, 14 February 1866, pg. 22.
7- Sequeira, Dolly Ellen (2021). Raj, S. Irudaya (ed.). Total History & Civics 10. Delhi: Morning Star.
8- Peters, K. J. (29 May 1946). "Indian Patchwork Is Made of Many Colours". Aberdeen Journal. Retrieved 2 December 2014 – via British Newspaper Archive.(subscription required)

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

9- "From the archive, 26 July 1892: Britain's first Asian MP elected", The Guardian, 26 July 2013, retrieved 2 May 2018
10- Sultan, Nazmul S. (2022). "Moral Empire and the Global Meaning of Gandhi's Anti-imperialism". The Review of Politics. 84 (4): 545–569. doi:10.1017/S0034670522000560. ISSN 0034-6705. S2CID 252029430.

"Millionaire's daughter arrested". Portsmouth Evening News. 21 August 1930. Retrieved 2 Decemb